अन्तर्मुखी का जीवन

अन्तर्मुखी का जीवन कैसे होता है और ज्ञान की धारणा तथा शान्ति की प्राप्ति के लिए अन्तर्मुखता क्यों ज़रुरी है? – इस पर स्वयं परमपिता परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान....

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मेरी दैवी वंशावली के रत्नो! देखो, ज्ञानी मनुष्य का रहन-सहन कछुए के समान गाया हुआ है परन्तु अन्तर्मुखता को धारण किये बिना कछुए के समान कोई रह नहीं सकता। बाह्यमुखी मनुष्य का मन अथवा कर्मेन्द्रियाँ तो सदा ही कर्म-विकर्म में लगी रहती हैं, क्योंकि देही का और देही के पिता, मुझ परमात्मा का परिचय न होने के कारण वह अन्तर्स्थित नहीं हो सकता। इसलिये, उसके पिछले कर्मों का खाता (हिसाब-किताब) चुका ही नहीं होता, नया हिसाब-किताब बनता ही रहता है। परन्तु कर्मातीत, परमहंस, ज्ञानसागर, रत्नागर, मुझ परमात्मा से ईश्वरीय गुण और ज्ञान के अमूल्य रत्नों का खज़ाना पाने वाला अन्तर्मुखी मनुष्य इस ही अनमोल धन से बहलाता है। अन्तर में स्थित हो कर वह ज्ञान-स्नान करता ही रहता है। इस कारण उसमें अपवित्रता या तो आती नहीं या स्थिर नहीं होती। अन्तर में ज्ञान को जगाने के कारण उसके पुराने विकर्म खत्म हो जाते और नये कर्म अकर्म (शुभ कर्म) हो जाते हैं। इस गुह्य ईश्वरीय रहस्य का अनुभवी होने के कारण अन्तर्मुखी मनुष्य शरीर निर्वाहार्थ आवश्यक कर्म करते हुए भी कछुए के समान कर्मेन्द्रियों को समेट कर शरीर से उपराम, अशरीरी हो जाता है, क्योंकि वह यह रीति भली-भांति जानता भी है।

वह अपने तन-मन-धन को व्यर्थ ही क्षणभंगुर भोगों में नहीं लगाता बल्कि उनसे ईश्वरीय अलौकिक कर्त्तव्य करता है। वह तो कर्मयोगी के समान वर्तता है। परन्तु जो अन्तर्मुखी ही नहीं है, वह कर्मेन्द्रियों से न्यारा होकर अथवा कछुए के समान समेट कर रह ही कैसे सकता है? वह पवित्र ही कैसे बन सकता है? पवित्र तो अन्तर्मुखी मनुष्य ही रह सकता है, क्योंकि विकारों की उत्पत्ति तो बाह्यमुखता अर्थात् देह अथवा पदार्थों के नाम-रूप पर विचलित, मोहित अथवा विकृत होने ही के कारण होती है।

अन्तर्मुखी ही ज्ञान की धारणा कर सकता

अनुभवी प्राणो, ज्ञान का सागर तो मैं परमपिता परमात्मा ही हूँ जो कि पूर्ण पवित्र और एकाग्रचित्त हूँ। अतः मुझ से ज्ञान भी पवित्रता पूर्वक तभी प्राप्त हो सकता है जबकि ज्ञान लेने वाला भी मुझ से योग-युक्त हो और उसकी बुद्धि अनेक व्यक्तियों अथवा विषयों की याद में न भटकती हो अर्थात् वह अन्तर्मुखी हो। जो मनुष्य अन्तर्मुखी न होकर ज्ञान सुनता है, उसके ज्ञान पर माया की परछाइयाँ अवश्य पड़ जाती हैं। अर्थात् वह ज्ञान के यथार्थ और गुह्य रहस्य को, और सम्पूर्ण पवित्र शक्ति को धारण नहीं कर सकता। अतः यह तो ठीक है कि ज्ञान द्वारा ही मनुष्य अन्तर्मुखी होता है परन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि अन्तर्मुखी होने से ही मनुष्य ज्ञान को भी पूर्ण रीति धारण कर सकते हैं, जिस ज्ञान की धारणा पर ही उसके वर्तमान जीवन के अतीन्द्रिय सुख का और भविष्य जन्म-जन्मान्तर तक प्रालब्ध बनाने के लिये वर्तमान समय के सारे पुरुषार्थ का आधार है। अतः अन्तर्मुखी अवस्था के लिये ज्ञान, ज्ञान के लिये अन्तर्मुखी अवस्था, और सम्पूर्ण प्रालब्ध की प्राप्ति के लिये सम्पूर्ण ज्ञान तथा सम्पूर्ण अन्तर्मुखता, दोनों ही की आवश्यकता है।

अन्तर्मुखी ही शान्तचित होता है

हे वत्सो, जब कोई मनुष्य मान-अपमान अथवा अपकार की वार्ता करता है तो अन्तर्मुखी मनुष्य उसे सुनते हुए भी नहीं सुनता अथवा अनसुनी कर देता है। उस मनुष्य को, स्वरुप-स्थिति द्वारा देह से न्यारा होने की जो टेव पड़ जाती है, वह उस स्थिति द्वारा दुष्ट की दुष्टता को और अपकारी के अपकार को गृहण ही नहीं करता है। जहाँ बुरा कर्म होता है, उसके पाँव वहाँ से लौट आते, और आँखें बन्द हो जाती हैं, क्योंकि उसका मन उस ओर ध्यान ही नहीं देता और उसकी बुद्धि उन बातों को अपने पास ही नहीं रखती। अतः जब कि अन्तर्मुखी मनुष्य न बुरा सोचता और न बुरा करता है और न ही बुरी तरफ ध्यान देता है तो उसका मन रुपी हंस भी शान्ति के सरोवर में सदा शीतलता के मोती चुगता ही रहता है।

अन्तर्मुखी अवस्था और अन्तर्मुखी स्थिति

परन्तु देखो, अन्तर्मुखी अवस्था और अन्तर्मुखी स्थिति में भी फर्क है। जब तक अन्तर्मुखता की सहज और निरन्तर स्थिति न हो जाये तब तक अन्तर्मुखी अवस्था ही चलती रहती है। अर्थात् मनुष्य अन्तर्मुखता का अभ्यास करते हुए कभी-कभी बाह्य मुखी भी हो जाता है और फिर अपने पुरुषार्थ से अन्तर्मुखी हो जाता है। दूसरे शब्दों में, ऐसा कहें कि अन्तर्मुखी अवस्था तो पुरुषार्थ की अवस्था है परन्तु 'अन्तर्मुखी स्थिति' उस पुरुषार्थ का परिणाम अथवा स्वरुप अथवा लक्ष्य है, जिसके बाद ही मनुष्य को अपने पुरुषार्थ की पराकाष्ठा के अनुसार, नई सतयुगी सृष्टि में दैवी पवित्रता, दैवी सुख और दैवी शान्ति का दैवी पद प्राप्त होता है।

जम्मू। मकर संक्रांति एवं लोहड़ी के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में गुलाम नबी आज़ाद,फॉर्मर एलओपी,फॉर्मर यूनियन मिनिस्टर,फॉर्मर चीफ मिनिस्टर जम्मू एंड कश्मीर एवं प्रेसीडेंट,गांधी ग्लोबल फैमिली न्यू दिल्ली ने ऑनलाइन सभी को अपनी शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर जम्मू एंड कश्मीर के फॉर्मर मिनिस्टर आर.एस. चिब को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी। मौके पर एस.पी. वर्मा,पद्मश्री, राजयोगी ब्र.कु. रविंदर भाई सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मुंगरा-बादशाहपुर(उ.प्र.)। सांसद बी.पी. सरोज को नववर्ष एवं जन्मदिन की बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता बहन।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। नगर विधायक चैतन्य कश्यप को ईश्वरीय ज्ञानचर्चा के पश्चात् नववर्ष की शुभकामनायें एवं कैलेण्डर देते हुए ब्र.कु. अनीता दीदी व ब्र.कु. सविता बहन। साथ हैं भाजपा जिला उपाध्यक्ष मनोहर पोरवाल, समाजसेवी राजेन्द्र पोरवाल तथा अन्य।

भादरा-राज.। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन, थाना अधिकारी भादरा सीआई रणवीर जी, सहायक अभियंता नगरपालिका भादरा मेघराज जी, डेन्टिस्ट डॉ. बलवान जी, डॉ. वेदप्रकाश जी, पार्षद वनिता जी तथा ब्र.कु. भगवती बहन।

सूरत-मोटा वराछा(गुज.)। 'स्वास्थ्य से खुशी' विषयक आयुर्वेदिक शिविर का उद्घाटन करते हुए मेडिकल विंग के डॉ. खंजन, पूर्व वायु सेना अधिकारी हरेन गांधी, ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. दक्षा बहन तथा अन्य।

समस्तीपुर-बिहार। मंडल रेल प्रबंधक आलोक अग्रवाल एवं श्रीमति अग्रवाल को गुलदस्ता भेंट कर नए वर्ष की शुभकामनायें देते हुए ब्र.कु. कृष्ण भाई तथा ब्र.कु. सविता बहन।

गोट्टीगेरे-बेंगलुरु। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत गणतंत्र दिवस पर समाज में जागरुकता लाने के उद्देश्य से आयोजित बाइक रैली को एम. कृष्णप्पा,विधायक,बेंगलुरु साउथ ने हरी झंडी दिखाई। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में एम. कृष्णप्पा के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए जयराम जी,कॉर्पोरेटर, टी.नारायण,कॉर्पोरेटर, डॉ. अफशाद,चेयरमैन,इन क्लस्टर स्काउट्स एंड गाइड्स, सौरव जी,वाइस प्रेसीडेंट,जीएआईपी, एस.हरीश,सोशल वर्कर तथा राजयोगिनी ब्र.कु. अम्बिका दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,वी.वी. पुरम।

रायपुर-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान थीम के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सांसद सुनील सोनी, कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव शर्मा, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सविता दीदी, पार्षद अमर बंसल, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष छगन मुंदड़ा आदि गणमान्य लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये।

टोहाना-हरियाणा। राष्ट्रीय किसान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न गांवों से आये जैविक खेती करने वाले किसानों को ब्र.कु. वंदना बहन एवं ब्र.कु. कौशल्या बहन ने सम्मानित किया। इस अवसर पर एस.डी.ओ. डॉ. चरंजीत सिंह, शिव नंदीशाला,टोहाना के संयोजक धर्मपाल सैनी, पंचगव्य आचार्य वीरेन्द्र जी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

काकीनाड़ा-आ.प्र.। राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में सिटी मेयर शिव प्रसन्ना गरु, आत्मा डायरेक्टर ज्योतिर्मयी गरु, पद्मश्री गरु, राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी बहन, एरिया कॉर्पोरेटर्स तथा बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मुम्बई-घाटकोपर। वर्ल्ड ब्रेल दिवस पर नेशनल फेडरेशन ऑफ विजुअली इंपेयर्ड पर्सन्स के वांगनी शाखा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। मौके पर 'सेवांजली प्रोजेक्ट' के अंतर्गत वांगनी गांव के नेत्रहीन भाई-बहनों सहित 200 परिवारों को सर्दी के कंबल बांटे गए। इस अवसर पर बदलापुर सेवाकेन्द्र से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. नंदा बहन व घाटकोपर सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. आरती बहन उपस्थित रहे।

कोरापुट-ओडिशा। नये वर्ष के उपलक्ष्य में टाउन थाना आई.आई.सी. धीरेन पटनायक पी.एस. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा बहन।